[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3248

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

मानव स्वास्थ्य एवं प्रदूषण

प्रतिभा वर्मा[1], अलका कटियार[2]
[1]सरोजिनी नायडू, शा. कन्या पी.जी. महाविद्यालय, भोपाल म.प्र.
[2]महिला महाविद्यालय, किदवई नगर, कानपुर उ.प्र.

साराँश

पर्यावरण का तात्पर्य समूचे भौतिक एवं जैविक विश्व से है। जिसमें जीवधारी रहते हैं, बढ़ते हैं, पनपते हैं और अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों का विकास करते हैं। सत्य तो यह है कि जीवन का अस्तित्व मूलतः पर्यावरण पर निर्भर है। पर्यावरण के किसी भी तत्व के भौतिक, रासायनिक अथवा जैविक विशेषताओं में परिवर्तन जो मानव या अन्य प्राणियों के लिए हानिकारक हो पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है।

पर्यावरण प्रदूषण आज एक विश्वव्यापी समस्या का रूप ले चुका है और भारत में भी यह समस्या विविध रूपों में दृष्टिगत होती है। औद्योगिक एवं तकनीकी विकास, तीव्र जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण आदि के कारण पर्यावरण के दबाव में निरन्तर बढ़ोतरी होने लगी। आज सबसे बड़ी आवश्यकता है ''विनाश रहित विकास'' किन्तु मानवीय क्रियाकलापों से पर्यावरणीय असंतुलन बढ़ता ही जाता है जिससे पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है और मानव सहित अन्य प्राणियों एवं वनस्पतियों का अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है। पर्यावरण प्रदूषण मानवीय स्वास्थ्य को प्रभावित करता है जिससे घातक रोग उत्पन्न होते हैं।

- शुद्ध वायु में 78 प्रतिशत नाइट्रोजन 21 प्रतिशत ऑक्सीजन, 0.13 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड तथा निष्क्रिय गेसें होती हैं परन्तु वर्तमान में वायु में कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन, हाइड्रोजन सल्फाइड, क्लोरोफ्लोरो कार्बन, पारा, क्लोरीन, सीसा, ओजोन, मीथेन गैस भी विद्यमान है जिससे वायु प्रदूषण की समस्या पैदा हो रही है। जिसके कारण श्वास संबंधी रोग, आंखों में कष्ट, पौधों का विकास अवरूद्ध होना, मानसिक तनाव, कैंसर, सिरदर्द आदि हो सकते हैं।
- जब ध्वनि कान की साध्य सीमा को पार कर जाती है और उनका प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है। ध्वनि प्रदूषण, वाहन, मशीनें, पालतू पशु, बादलों की गड़गड़ाहट, ध्वनि विस्तारक यंत्र आदि ध्वनि प्रदूषित करते हैं। जिसके कारण श्रवण शक्ति में कमी, बोलने में बाधा,निद्रा में बाधा, मानसिक तनाव, एकाग्रता में कमी, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन, जान लेवा, दुर्घटनायें, रक्तचाप इत्यादि रोग हो जाते हैं।
- जो तत्व जल की गुणवत्ता को कम करे उन्हें जल प्रदूषण कहते हैं। प्रदूषित जल से जलीय जीवों का विनाश, मानव शरीर में अनेक विकृत्तियॉ, खांसी, जुकाम, पीलिया, डेंगू, हैजा, पेचिश, पोलियो आदि रोग होते हैं।
- अनेक औद्योगिक प्रदूषण तापीय प्रदूषण को जन्म देते हैं। परमाणु उर्जा उत्पादन संयंत्र, शीतलन टॉवर से गिरने वाला गर्म जल भी तापीय प्रदूषण उत्पन्न करता है। तापीय प्रदूषण जीव जंतु एवं पेड़ पौधों दोनों को प्रभावित करता है।
- परमाणु उर्जा का आधार रेडियोधर्मी खनिजों के विखण्डन की प्रक्रिया जिसमें यूरेनियम की खदानों के अपक्षम, परमाणु भट्टी के अपशिष्ट प्रदूषण के कारण बन जाते हैं। जिसके कारण त्वचा में जलन, कैंसर, अनुवांशिक परिवर्तन, ल्यूकेमिया, लाल रक्तकणिकायें एवं श्वेतरूधिरकण में कमी, बालों का मुड़ना, तंत्रिका तंत्र के रोग होते हैं।

- औद्योगिककरण, नगरीकरण तथा भौतिकवादी दृष्टिकोण की व्यापकता के फलस्वरूप वर्तमान समय में सामाजिक प्रदूषण की समस्या दूसरी पर्यावरणीय समस्याओं से अधिक जटिल ओर भयंकर बन गई है। इनके तहत आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दुष्कर्म, अपराध, बेरोजगारी,
- गरीबी, चोरी, डकैती, अपहरण, हत्या, दहेज, बलात्कार, शराब का सेवन, आंतकवाद, भ्रष्टाचार के कारण, कानून और न्यायिक व्यवस्था भी सफल नहीं हो पाती है। जिनके कारण मानसिक अवसाद झेलना होता है।

सुझाव

1. वृक्षारोपण अधिक मात्रा में करें।
2. कार पूलिंग एवं सार्वजनिक यातायात को बढ़ावा दें।
3. परमाणु परीक्षण प्रतिबंधित हो।
4. परमाणु कचरा एवं अपशिष्ट समुद्र में उत्सर्जित ना करें।
5. ठोस अपशिष्ट आग के द्वारा नष्ट किये जायें
6. प्लास्टिक ओर थर्माकोल का प्रयोग न करें।
7. पूजन सामग्री जलाशय में ना फेंके।
8. कार्बन उत्पादन एवं उपभोग को कम किया जाना चाहिए।
9. कार्बन प्रदूषक नियंत्रण कानून सख्ती से लागू किया जाये।
10. ठोस अपशिष्ट को खाद बनाने में प्रयोग में लायें।
11. प्रदूषण के प्रति सार्वजनिक चेतना जागृत की जाना चाहिए।

संदर्भ

1. *सिन्हा मेघा : पर्यावरण प्रदूषण : वंदना पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2007*
2. *वर्मा धनंजयः पर्यावरण चेतनाः म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, 2006*
3. *डॉ. अरूण रघुवंशीः पर्यावरण तथा प्रदूषणः म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2005*
4. *डॉ. शक्ति भारद्वाजः पर्यावरणीय विष विज्ञानः म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2010*